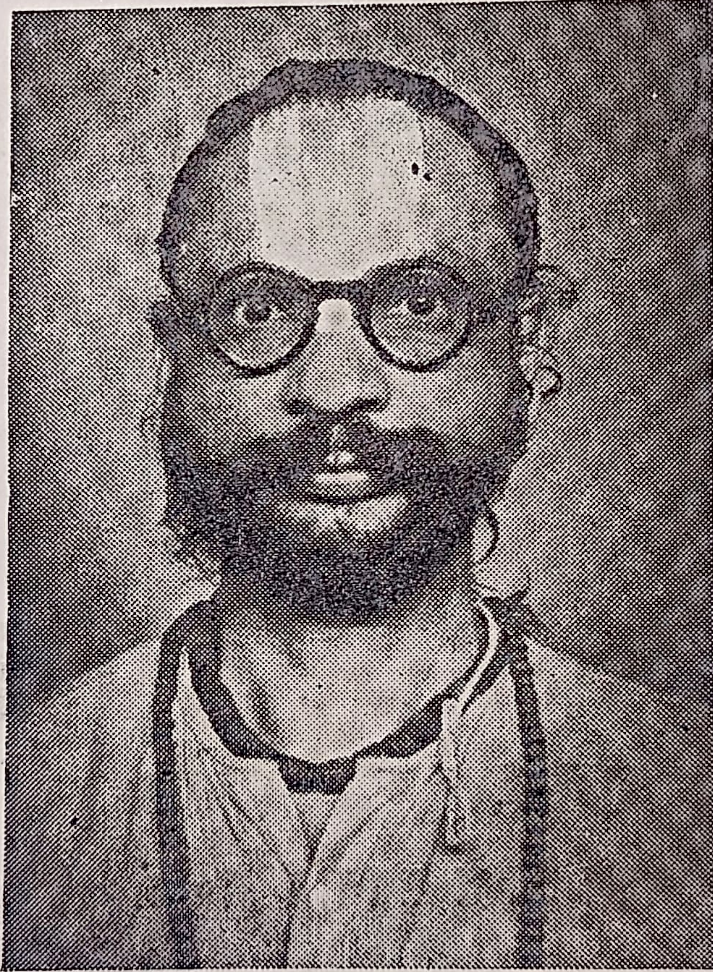
युक्तं यस्य वचो हरि-ध्वनि निभं यावन्न कर्णे गतम्,
तावन् 'मानस'-विघ्नकारि-करिणो गर्जन्ति गर्वाकुलाः ।
सोऽयं रामचरित्रमानसमहातत्वानुसंधायकः,
श्रीमान् 'रामकुमार' पण्डित वरः सम्बर्द्धयते सूक्तिभिः ॥ १ ॥
द्वाभ्यां संभूय गीतं रघुपतिचरितं रामयज्ञप्रसंगे,
द्वाभ्यामश्वोपनीतो रघुपतिपृतना निर्जिता द्रागुभाभ्याम् ।



हंहो किन्त्वेक एव श्रुतिशत-सहितां रामगाथां गृणाति,
संदेहान् चोरयित्वा जयति गुणिगणान् राम पूर्वः कुमारः ॥ २ ॥
संशय-'तारक' नाशनशीलो, विबुध कदम्ब-विनोद सलीलः ।
रामचरित मानस-सुविचारो जयतु सदा कवि रामकुमारः ॥ ३ ॥
( ये तीनों श्लोक-शास्त्रार्थ महारथी पण्डित श्री माधवाचार्य
शास्त्री ( देहली ) रचित हैं । )

श्रीमते रामानन्दाय नमः

# श्री मंगल पचीसी

## मङ्गलाचरण

राम सीय पितु मातु बन्धु सुत सखा दास गन।
सबही के पद पद्म नमौं शिर कर्म बचन मन॥
जिनकी कृपा कटाक्ष त्यागि सब मायिक बन्धन।
गाइ विमल यश राम कुमारहु पावै पद जन॥
सानुकूल तिनहूँन पै नाम लिहाड़ी जौन जन।
सो हमैं सदा सबभाँति सों होहु राम मङ्गलकरन॥

(१)

अशरनशरन उदार दारसुत मोह विनाशन।
रचित त्रिगुण मुख जगत चतुर्मुख वेद प्रकाशन॥
गजमुख षण्मुख-इष्ट-पञ्चमुख मान बढ़ावन।
दशमुख सकुलविनाशि सहसमुख हियछविछावन॥
मनुशतरूपा-विमलतप-फल दायक भवभय हरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(२)

पुरजन परिजन-सहित रानि-दशरथ सुख कारन।
मुनिमखशुचि रखवार ससुतताटिकदल दारन॥
मग मुनितिय उद्धरन पिनाकि-पिनाक विहण्डन।
सप्त द्वीप नृप सहित परशुधरमद अति खण्डन॥

बन्धुसहित निज ब्याहकरि आइ अवध जन दुखहरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(३)

पितुनिदेश धरिशीश चले बन सुर दुखदारन।
अनुज सीय सँग केशमुकुट धनुशर कर धारन॥
गुह प्रच्छालित चरण शरण गत मान बढ़ावन।
मगबासिन कृत कृत्य करत मुनि आश्रम पावन॥
चित्रकूट नितनिवसि प्रभु मुनि-कुमार-भवदुख नरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(४)

मातुव्यथित लखि व्यथितभाव सियसह उरधारन।
प्रिय सनेहबस विकलदुखित परिवार सँभारन॥
पुरजन परिजन जनक रिषि मुनिन मान बढ़ावन।
मिथिला अवध समाज मध्य नृप नीति पढ़ावन॥
चरणपादुका दै विमल भरत हृदय धीरज धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सो होहु राम मङ्गल करन॥

(५)

कटिकशिला रचि पुष्पहार सिय उर पहिरावन।
सिय कपोल रचि विविध रङ्ग दल फूल बनावन॥
सुरपतिसुर करि घात लखेउ तेहि बल दिखरावन।
तीनिहुँ लोक भ्रमाय फेरि आनेहु निजपावन॥
पुरुषकारिता सियहिं लखि जियतछाँड़ि इक दृग हरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(६)

जब लछिमन भे विकल अवधपुर तबहिं सँभारन।
जब किय रिस तट गङ्ग सुमन्तहिं तुरत सुधारन॥

चित्रकूट लखिकुपित बचन प्रिय भाषि दुलारन।
नित लालित लखि लखन भरत प्रति क्रोधहिं मारन॥
जग नृपगति वर्णित लखन मुख भरत भाइ मद रहितमन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(७)

मिलि शरभङ्ग, सुतीक्ष्ण, घटजआश्रम पगधारन।
पञ्चबटी करि पर्णकुटी सुरकाज सँवारन॥
करि सूपनखहिं विरूप खरादिक खलदल दारन॥
बधि मृग-माया-सीय हरइ बच शोक उचारन॥
पितु सों अधिक जटायु की अन्त क्रिया करि किय तरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(८)

खोजत माया सीय विकल नर नाट्य दिखावन।
हतिकबन्ध नशिश्राप ताहि सुरपुर पहुँचावन॥
तजि मुनिगन थल परमप्रेम शबरिहिं प्रगटावन।
तृण, फल, अंकुर, मूल, फूल, दल, जल, मनभावन॥
तिसु पदरज सर शुद्ध करि नित शबरीफल उरधरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(९)

पम्पासर शुचि मज्जि देवरिषि संसय टारन।
सन्तन गुनगन बरनि शरनगत कह्यो सँभारन॥
रिष्यमूकगिरि चले भक्तकपि उर दुखदारन।
मिलि केशरीकुमार सूर्यसुत मैत्री धारन॥
सप्त ताल हनि एकशर अस्थि फेंकि संसय हरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१०)

निजजन कारजसाधि एकशर बालि बिदारन।
करि कपिपति सुग्रीव तासु सब भवभय टारन॥
रिष्यमूक सुररचित गुहाबसि पावस कारन।
लखि सुग्रीव असावधान तेहि सीख सँवारन॥
आये बानर भट जितक मिलि सबसों सबदुख दरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(११)

दै मुद्रिका निदेश मारुतिहिं सिय समुझावन।
कपिन प्रेरि भुविबिबर पठाइ पथश्रम बिनसावन॥
बदरीबन तापसिहिं कपिन बारिधि पहुँचावन।
सम्पातिहिं नवपत्त विरचि नवचाव बढ़ावन॥
बल कहि हारे सकलकपि मारुतिउर साहसधरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१२)

सुरमुख सुरसहिं प्रेरि दास बुधि बल दिखरावन।
राहुजननि मरबाइ कपिहिं रिपुपुर पहुँचावन॥
करि लङ्किनि अनुकूल पवनसुत लङ्क दिखावन।
मिलइ विभीषण, पठइ सीयढिग बोध दिवावन॥
करि मारुतिहिं निमित्त रिपु-बाग, पुत्र, पुर दल दरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१३)

प्रेरि शारदहिं दसमुख-मुख कपि पूँछ बँधावन।
निकर निशिचरन करन बस्त्र धरि आगि लगावन॥

लङ्क जरइ जनभवन बँचइ जग यश प्रगटावन।
चूड़ामणिहिं दिवाइ कपिहिं निज ढिग पहुँचावन॥
कीशभालुदल सङ्ग लइ बारिधि तट डेरा धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१४)

मिलत दशानन अनुज विभीषण मीत बनावन।
रावण आछत ताहि लङ्कपति तिलक लगावन॥
हृदय कृपा अति धारि सिन्धु सन मार्ग मँगावन।
लखि सागर अवहेल कोपि सरतीव्र चढ़ावन।
सिन्धु शत्रु खल बल दलन आश्रित जनदुख दलदरन॥
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१५)

बाँधि सेतु दल कीश भालु रिपुपुर पहुँचावन।
हनि अलक्ष्यशर छत्रमुकुटताण्टक गिरावन॥
पठइ बालिसुत दूत रावणहिं नयसमुझावन।
अङ्गदपद रोपवाइ शत्रु बल-दर्प नशावन॥
चारिअनीकरि कपिकटक लङ्कघेरि खलदल दरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(१६)

ब्रह्मशक्ति लहि लखनहृदय नरगति दिखरावन।
पठइ पवनसुत वैद्य आनि जनमान करावन॥
माँगि द्रोणगिरि पवनतनय अतिबल जतरावन।
कालनेमि मरवाइ भरतशर कपि विद्रावन॥
लहि औषधि लछिमन जिअइ कपिदल सुर हर्षहिं धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( १७ )

कुम्भकर्णहनि बिनुप्रयास जनदुख विनसावन।
लछिमन कर घननाद नशइ जनयश विकसावन॥
सहि प्रचण्ड दशकण्ठशक्ति जनत्रास नसावन।
दिव्य धर्मरथ सिखइ विभीषण हिय हुलसावन॥
दशमुख हति निजपुर पठइ सकल जगत सब दुखदरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( १८ )

सियहिं साखि हित अनल डारि पुनि काढ़ि दिखावन।
देइ विभीषण लङ्क विविध नृपनीति सिखावन॥
चढ़ि पुष्पक सिय अनुज सखन युत उत्तर धावन।
मिलि निषादपति भरद्वाज ऋषि मान बढ़ावन॥
पठइ पवनसुत विप्रबपु भरत हृदय धीरज धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( १९ )

आइ अवध ढिग सखन दिव्य पुर बिभव बतावन।
पुष्पक पठइ कुबेर पाँहि पुरजन ढिग आवन॥
गुरु पद रज धरि शीश-सकल द्विज चरनन नावन।
सकल मातु पद परशि भेंटि हिय सुख उपजावन॥
चरन परत भेंटे भरत दलि दुख-सब-हिय सुख भरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( २० )

लहि निदेश गुरु विप्र करन सिंहासन पावन।
सकल जगत करि सुखित शुद्ध नृपनय प्रगटावन॥

राजसूय हयमेधादिक सब यज्ञ करावन।
कीन्ह राज्य बहुकाल चरित शुचि मुनि मन भावन॥
जो जन चाहत भाँतिजेहि सो भाव आशु पूरन धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(२१)

मातु, बन्धु, सिय, सुतन सहित जग अति छबि छावन।
साम, दाम अरु दण्ड भेद नृपनीति निभावन॥
सारमेय प्रति लखि अनीति यति दूरि करावन।
बक उलूक खग न्याउ चुकइ जग यश प्रगटावन॥
चारि खानि जग जीव जत सबके हिय आनँद भरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(२२)

सब तीर्थनि यश थापि देव मर्याद बढ़ावन।
थपि मानव मर्याद आसुरी मत बिनशावन॥
पुरजन परिजन प्रीति रीति करि जग दिखरावन।
अनुजन सुतन समेत धर्म-नृप नय सिखरावन॥
प्रेमप्रगटि हनुमन्त पर निज तन मर्यादित धरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

(२३)

उलटा नाम जपाइ व्याधते विप्र बनावन।
दै महत्व कवि आदि सुयश आपन प्रगटावन॥
नाम नेम दै शिवहिं जीव अघ दूरि करावन।
कहइ हराम हराम यवन निजधाम पठावन॥
शिवसुत कहँ निज नाम बल सकल प्रथम पूजित करन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( २४ )

अति अनूप अवतार कोउ समता कछु आव न।
परम दिव्य नरभूप रूप रस एक रहावन॥
करि परास्त अवतार तत्वपरतम प्रगटावन।
पुर-नरिजन सँग लेइ सबपु साकेत सिधावन॥
अपर नाहिं हरिरूप कोउ मुनिमन तिय भावहिं भरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

( २५ )

परम पवित्र विचित्र अर्थ मय नाम सुपावन।
अद्भुत अमित चरित्र गाइ श्रुति पारहिं पाव न॥
समता पूर्ण सुअर्ध कहाँ कोउ पावहु आव न।
दूरि दलन दुख दास सु दौरत नाँगे पाँवन॥
रामकुमार जु दास हित डाँटि दूरि माया हरन।
सो हमैं सदा सब भाँति सों होहु राम मङ्गल करन॥

## परिचय एवं पाठ माहात्म्य

श्री रामानन्दाचार्य बंश श्री राम प्रसादा।
तिन शिष बगही थान ख्यात थापित मर्यादा॥
रामायणि श्री सदाराम शिष-शिष्य सो ममगुरु।
रामकुमार सु रचित निवसि नित मणिपर्बत धुर॥
मङ्गल पचीसाहिं जो नेम सहित नित गाइहैं।
सकल लोक सुख भोगि जग अन्तराम पुर जाइहैं॥

# श्री हनुमज्जन्म स्तुति

(१)

भये प्रगट कपीशा सुरमुनि ईशा गौरीशा कपि बपुधारी।
अञ्जनिलाला दीनदयाला खल काला जन हितकारी॥
शुभ कार्तिक मासा मङ्गल बासा साँझ सुपासा सुखकारी।
शुचि नखतसुस्वाती मेषलगनशुभ कृष्णचतुर्दशि तिथिभारी॥

(२)

प्रातःरविदेख्यो फल करि लेख्यो तेहिं भक्षणहित मन दीन्ह्यो।
गगन फलांक्यो रविरथ कम्प्यो राहु सशंक्यो नहिं चीन्ह्यो॥
सुरपुर झट जाइ बिपति सुनाई सुरसाईं क्रोधहिं कीन्ह्यो।
निज गज चढ़ि धाये कपिपहिं आये बज्र उठाये कर लीन्ह्यों॥

(३)

मारुति लखि राहुहिं तजि रविबाहुहिं ताहुहि बड़ फल जाना।
फिरि लखि इन्द्रहिं सहित गजेन्द्रहिं यह फल भल भखु माना॥
सुरपति हियकोपित श्रुति पथ लोपित बज्र प्रहार सुठाना।
हनुपर पवि लीन्हें व्याकुल कीन्हें बज्र दशन विनशाना॥

(४)

नभ रविपथ जाई उलटि सुधाई वेद शास्त्र सब पायो।
रवि सुत ढिग आई राम मिलाई सिय हित लङ्क मँझायो॥
रावण सुत मार्यो लङ्का जार्यो सेतु हेतु गिरि लायो।
अहिफाँस मिटायो लछिमन ज्यायो रामहिं सीय मिलायो॥

(५)

भरतहिं सुख दीन्ह्यों प्रभु नृप कीन्हों सियपद मनचित दीना।
नृप रूप अनूपा रामस्वरूपा मन्त्र ध्यान शुचि लीना॥
कपि बल बिरताई शुचि सेवकाई रामगान बहु कीना।
गरुड़ चक्र अर्जुन भीमहु कर गर्व कीर्ति किय छीना॥

(६)

दिय बरदाना कृपानिधाना जो हनुमत यश गावै।
सब सुख जग माहीं भोगि सदाही अन्त परमपद जावै॥
हनुमत गुण गाहा सिन्धु अथाहा गाइ पार को पावै।
रामकुमारा दास अधारा पवन तनय पद ध्यावै॥

यह स्तुति हनुमान की नित गावै जो कोइ।
सिय अञ्जनी कुमार कै कृपा बृष्टि नित होइ॥

---

श्री मते रामानन्दय नमः

# लेखक की गुरु परम्परा

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम।
अस्मादाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम्॥ १ ॥
परधाम्नि स्थितो रामः पुंडरीकायतेक्षणः।
सेवया परया जुष्टो जानक्यै तारकं ददौ॥ २ ॥
श्रियः श्रीरपि लोकानां दुःखोद्धरणहेतवे।
हनुमते ददौ मन्त्रं सदा रामाङ्घ्रिसेविने॥ ३ ॥
ततस्तु ब्रह्मणो प्राप्तो मुह्यमानेन मायया।
कल्पान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणे दत्तवानिमम्॥ ४ ॥
मन्त्रराजजपं कृत्वा धाता निर्मातृतां गतः।
त्रयीसारमिमं धातुर्बशिष्ठो लब्धवान् परम्॥ ५ ॥
पराशरो बशिष्ठाच्च सर्वसंस्कारसंयुतम्।
मन्त्रराजपरं लब्ध्वा कृतकृत्यो बभूव ह॥ ६ ॥
पराशरस्य सत्पुत्रो व्यासः सत्यवतीसुतः।
पितुः षडक्षरं लब्ध्वा चक्रे वेदोपबृंहणम्॥ ७ ॥
व्यासोपि बहुशिष्येषु मन्वानः शुभयोग्यताम्।
परमहंसवर्य्याय शुकदेवाय दत्तवान्॥ ८ ॥
शुकदेवकृपापात्रो ब्रह्मचर्य्यब्रते स्थितः।
नरोत्तमस्तु तच्छिष्यो निर्वाणपदवीं गतः॥ ९ ॥
स चापि परमाचार्यो गङ्गाधराय सूरये।
मन्त्राणां परमं तत्वं राममन्त्रं प्रदत्तवान्॥ १० ॥
गङ्गाधरात्सदाचार्यस्ततो रामेश्वरो यतिः।
द्वारानन्दस्ततो लब्ध्वा परब्रह्मरतोऽभवत्॥ ११ ॥

देवानन्दस्तु तच्छिष्यः श्यामानन्दस्ततोऽग्रहीत् ।
तत्सेवया श्रुतानन्दश्चिदानन्दस्ततोऽभवत् ॥ १२ ॥
पूर्णानन्दस्ततो लब्ध्वा श्रियानन्दाय दत्तवान् ।
हर्यानन्दो महायोगी श्रियानन्दाङ्घ्रिसेवकः ॥ १३ ॥
हर्यानन्दस्य शिष्यो हि राघवानन्द इत्यसौ ।
यस्य वै शिष्यतां प्राप्तो रामानन्दः स्वयं हरिः ॥ १४ ॥
रामानन्दस्य शिष्योभूदनन्तानन्द नामकः ।
तस्यशिष्यः कृष्णदासः पयोहारी प्रतापवान् ॥ १५ ॥
अग्रदासस्ततस्तस्य रामादिर्भगवानभूत् ।
तस्य लक्ष्मणदासोऽभून्मस्तरामस्ततोऽभवत् ॥ १६ ॥
लक्ष्मीरामश्च तच्छिष्यो नन्दलालस्ततोऽभवत् ।
ततश्चरणदासो भूद्धरिदासस्ततः परम् ।
तस्यरामप्रसादश्च मन्त्रानुष्ठानतत्परः ॥ १७ ॥
शिष्यो रामप्रसादस्य रामनेवाजदासकः ।
माणिकरामदासस्तु तस्य शिष्यो महामना ॥ १८ ॥
सदाराम सुदासस्तु तस्य शिष्यो हि भव्यधीः ।
दयाशीलः पराभक्ती रामायण्युपनामकः ॥ १९ ॥
रामदयालदासस्तु तस्य शिस्यो महातपी ।
फलाहारीति विख्यातो लोके खाकी च विश्रुतः ॥ २० ॥
श्री मद्धहरिनामदासस्तस्य शिष्यो महामतिः ।
त्यक्त्वा महान्तपदवीं गत्वा श्रीमणिपर्वते ॥ २१ ॥
वरविश्रामबागाख्या सुभगा बाटिका कृता ।
जानकीजीवनं तत्र स्थापित्वा सुप्रेमतः ॥ २२ ॥
अयोध्याबासरसिकः रामसेवन तत्परः ।
श्रीमद्धरिनामदासस्य कृपावात्सल्य भाजनः ॥ २३ ॥
कुत्सां मारयति यो वै श्रीरामः करुणाकरः ।
दासोऽहं ब्रह्मणस्तस्य ह्यानन्दगतिकः सदा ॥ २४ ॥

१—भगवान् श्रीराम जी
२—भगवती श्री सीता जी
३—श्री हनुमान जी
४—श्री ब्रह्मा जी
५—श्री बशिष्ठ जी
६—श्री पराशर जी
७—श्री व्यास जी
८—श्री शुकदेव जी
९—श्री पुरुषोत्तमा चार्य जी
१०—श्री गङ्गाधराचार्य जी
११—श्री सदाचार्य जी
१२—श्री रामेश्वराचार्य जी
१३—श्री द्वारानन्द जी
१४—श्री देवानन्द जी
१५—श्री श्यामानन्द जी
१६—श्री श्रुतानन्द जी
१७—श्री श्री चिदानन्द जी
१८—श्री पूर्णानन्द जी
१९—श्री श्रियानन्द जी
२०—हर्य्यानन्द जी
२१—श्री राघवानन्द जी
२२—भगवान् श्री रामानन्दाचार्यजी
२३—श्री अनन्तानन्द जी
२४—श्री कृष्णदास जी पयोहारी
२५—श्री अग्रदास जी ( रेवासा )
२६—श्री रामभगवानदास जी
२७—श्री लक्ष्मण दास जी
२८—श्री मस्तराम जी
२९—श्री लक्ष्मीराम दास जी
३०—श्री नन्दलाल दास जी
३१—श्री चरणदास जी (यधोरामजी)
३२—श्री हरिदास जी ( सन्डीला )
३३—श्री रामप्रसादाचार्य जी ( विन्द्वाचार्य )
३४—श्री रामनेत्राज दास जी ( बगही खैरा )
३५—श्री मणिकराम दास जी
३६—श्री सदाराम दास जी (रामायणी जी की कुटिया प्रमोदबन श्री अयोध्या जी)
३७—श्री रामदयाल दास जी फलाहारी

३८—अनन्त श्री स्वामी हरिनाम दास जी महाराज वरविश्राम बाग मणि पर्वत श्री अयोध्या जी

३९—पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी, वेदान्त भूषण, 'साहित्यरत्न' संस्थापक श्री राम ग्रन्थागम् वरविश्रामबाग, मणिपर्वत श्री अयोध्या जी।

# लेखक की अब तक की कृतियाँ



**प्रकाशित**

१ श्री राम मन्त्रार्थ
२ मानस पारायण पूजन पद्धति
३ दो विभूतियाँ ( अप्राप्य )
४ सखी गीता
५ धर्मरथ
६ मानस सिद्धान्त
७ श्री जानकी चरणचामर की सरला टीका
८ रजः प्रच्छालिनी ( श्री जानकी चरणचामर का पद्यानुवाद )
९ मङ्गल पचीसी ( पद्य )
१० संबाद बतीसी ( रम्भा शुक संबाद का सरस पद्यानुवाद )
११ वेदों में राम कथा

**अप्रकाशित**

१ वेदों में कृष्ण कथा
२ मानस रत्न मंजूषा
३ मानस मनन
४ मानस समाधान रत्नावली ( रा. च. मा. की दो सौ शङ्काओं का आलोचनात्मक शास्त्रीय समाधान )
५ सरल हवन पद्धति
६ भक्तमाल भूमिका भाष्य
७ भक्त भास्कर ( २०० छप्पयों में )
८ मानस मुक्तावली
९ मानस की वैदिकता
१० तुलसी-मानस माल ( सङ्कलित )
११ स्तोत्र मञ्जरी ( संस्कृत )
१२ पद्य प्रलाप
१३ ब्रह्मा की झोली या विश्ववैचित्र्य
१४ श्री सीता गुण-गान

---

मुद्रक—लक्ष्मीचन्द,

राष्ट्रभाषा मुद्रालय लहरतारा, बनारस-४